व्यतिरेकी विश्लेषण सिद्धान्त : एक सामान्य परिचय

*डॉ. हजारीमयुम सुवदनी देवी

1. व्यतिरेकी विश्लेषण पद्धति : मॉडल का विवेचन

व्यतिरेकी भाषा विज्ञान अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग है इसका सम्बन्ध द्वितीय भाषा शिक्षण से है। व्यतिरेकी भाषा विज्ञान के बारे में चर्चा करने से पहले ''व्यतिरेकी'' शब्द के बारे में बताना अप्रासंगिक न होगा। ''व्यतिरेक'' शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में डॉ. भोलानाथ तिवारी ने इस प्रकार बताया है; ''व्यतिरेक'' शब्द संस्कृत की रिच् धातु से बना है। रिच् धातु का अर्थ होता है अलग करना। ''रिच्'' के पूर्व वि (विशेष) तथा ''अति'' (अत्यधिक) उपसर्ग और अन्त में भाववाचक प्रत्यय ''घञ्'' जोड़ने से व्यतिरेक (वि + अति + रिच् + घञ्) शब्द बनता है तथा इसका अर्थ है विरोध या असमानता। इस ''व्यतिरेक'' से ही व्यतिरेकी शब्द बना है, जिसका अर्थ है ''विरोध या असमानता'' दिखाने वाला। व्यतिरेकी शब्द का अंग्रेजी पर्याय ''कंट्रास्टिव'' (Contrastive), व्यतिरेकी भाषा विज्ञान शब्द का प्रयोग ''कंट्रास्टिव लिंग्विस्टिक्स'' के लिए किया जाता है।

द्वितीय भाषा शिक्षण या अधिगम में होने वाली अध्येताओं की कठिनाइयों की ओर जब भाषा वैज्ञानिकों का ध्यान गया तो कठिनाइयाँ मातृभाषा या अध्येताओं की मातृभाषा के कारण होती हैं तो उन्होंने अध्येताओं की भाषा - स्रोत भाषा एवं सीखी जाने वाली नई भाषा - लक्ष्य भाषा के समान एवं असमान तत्वों के निरूपण को महत्वपूर्ण समझा। इस अध्ययन के फलस्वरूप व्यतिरेकी विश्लेषण पद्धति का विकास हुआ। व्यतिरेकी विश्लेषण द्वितीय भाशा के शिक्षण में होने वाली अध्येताओं की कठिनाइयों का पूर्वानुमान करके शिक्षण सामग्री निर्माण तथा शिक्षण विधि में अपेक्षित सुधार लाने का उद्देश्य सामने रखता है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत द्वितीय भाषा शिक्षण में होने वाली कठिनाइयों का मुख्य कारण अध्येता की प्रथम भाषा या मातृभाषा की संरचना की द्वितीय भाषा या लक्ष्य भाषा की संरचना से असमानता या अर्द्धसमानता का होना माना जाता है। अत: व्यतिरेकी विश्लेषण में दो भाषाओं की संरचनाओं का अलग-अलग विश्लेषण करके उनकी तुलना की जाती है तथा दोनों की संरचनाओं के असमान या विरोधी तथा समान तत्वों या बिन्दुओं को अलगाया जाता है। जहाँ असमानता या अर्द्धसमानता पायी जाती है, वहाँ भाषा अधिगम प्रक्रिया में ''व्याघात'' (Interfernce) उत्पन्न होता है। यही ''व्याघात'' द्वितीय भाषा शिक्षण में होने वाली कठिनाइयों का कारण बनता है। व्यतिरेक पर बल होने के कारण ही इसे व्यतिरेकी विश्लेषण (Contrastive Analysis) कहा जाता है। इसे बोलिंजर आदि विद्वानों ने ''व्यतिरेकी व्याकरण'' (Contrastive Grammar) कहा है। बुरेनने इसको ''व्यतिरेकी भाषा विज्ञान'' कहा है।

भाषाओं के व्यतिरेकी विश्लेषण में कुछ व्यवहारपरक मनोवैज्ञानिक प्रश्न भी उठ खड़े होते हैं। एक तो यह कि अन्य भाषा सीखने में मातृभाषा का ज्ञान कहाँ तक बाधा डालता है, दूसरे यह ज्ञान अन्य भाषा सीखने में कितनी सहायता कर सकता है। व्यवहारपरक व्यतिरेकी विश्लेषणवादी के अनुसार भाषा ''आदतों का समूह'' है। किसी नई भाषा को सीखना उसमें आचरण करने की सही आदतें सीखना होता है। जहाँ स्रोत भाषा (मातृभाषा) की आदतें लक्ष्य भाषा की आदतों के समान होती हैं वहाँ कोई व्याघात पैदा नहीं होता, इसलिए भाषा शिक्षण में कोई समस्या नहीं होती। ऐसी स्थिति को व्यतिरेकी विश्लेषणवादी घनात्मक आन्तरण (Positive Transfer) की संज्ञा देते हैं। लेकिन, जहाँ स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की आदतों में असमानता तथा अर्धसमानता पायी जाती है वहाँ भाषा शिक्षण में वास्तविक कठिनाई पैदा होती है। इस स्थिति को ऋणात्मक अन्तरण (Negative Transfer) की संज्ञा दी गई है। यही ऋणात्मक अन्तरण भाषा शिक्षण में कठिनाइयों का मूल कारण बनता है।

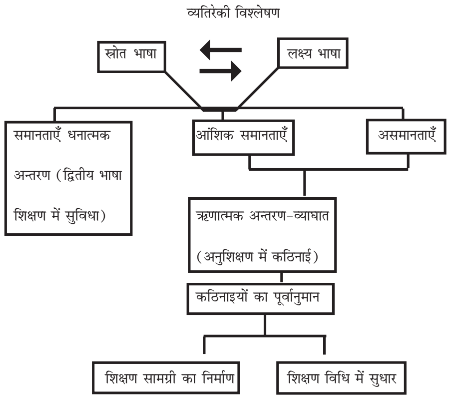

व्यतिरेकी भाषा विश्लेषण को निम्नलिखित आरेख[1] के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है-

व्यतिरेकी विश्लेषण का क्षेत्र

पहले यह उल्लेख किया गया है कि भाषा शिक्षण की मूल कठिनाइयाँ भाषाई व्याघात के कारण होती है। अत: व्यतिरेकी विश्लेषण में ''व्याघात'' के कारणों का पता लगाने के लिए स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा की संरचना के व्यतिरेकी बिन्दुओं का चयन करते हैं। व्यतिरेकी बिन्दुओं का चयन करने के लिए दोनों भाषाओं का भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण तथा दोनों विश्लेषणों की व्यवस्थित तुलना आवश्यक है।

इस प्रकार व्यतिरेकी विश्लेषण के क्षेत्र के रूप में निम्नलिखित तथ्य सामने उभर कर आते हैं-

1. एक भाषा की संरचना (स्वनिमिक, व्याकरणिक तथा कोशीय) की तुलना अन्य भाषा की तदनुरूपी संरचना से की जा सकती है।
2. इस तुलना के आधार पर द्वितीय भाषा या लक्ष्य भाषा सीखने में सम्भावित कठिनाइयों का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।
3. इस तुलना के आधार पर सम्भावित कठिनाइयों के पूर्वानुमान से भाषा शिक्षण सामग्री तथा भाषा शिक्षण विधियों में आवश्यक सुधार किया जा सकता है।

*हिन्दी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, काँचीपुर, इम्फाल

उपर्युक्त सिद्धान्त पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यतिरेकी विश्लेषण ''समुचित भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्त'' (Adequate Linguistic Theory) की अपेक्षा करता है। दो भाषाओं की तुलना के लिए दोनों भाषाओं का पूर्ण तथा ''व्यवस्थित'' भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण आवश्यक है। ''पूर्ण'' तथा ''व्यवस्थित'' विश्लेषण के लिए समुचित भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्त का होना भी उतना ही जरूरी है जिसके अन्तर्गत ध्वनि व्यवस्था, पद रचना, वाक्य रचना और अर्थ रचना का समुचित अध्ययन किया जा सके।

व्यतिरेकी विश्लेषण की दूसरी अपेक्षा व्यतिरेकी सिद्धान्त की है जिसके सुव्यवस्थित प्रयोग से दोनों भाषाओं के व्यतिरेकी तत्वों को खोजा जा सकता है। इस दिशा में अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान केन्द्र वाशिंगटन डी.सी. में ''व्यतिरेकी विश्लेषण माला'' के अन्तर्गत महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। इस माला की भूमिका में इसके प्रधान सम्पादक चार्ल्स फर्ग्युसन ने लिखा है कि ''बहुत से भाषा वैज्ञानिकों और भाषा विशेषज्ञों की यह मान्यता है कि द्वितीय भाषा शिक्षण में मुख्य समस्या 'व्याघात' की है जो लक्ष्य भाषा तथा अध्येता की मातृभाषा की संरचनात्मक असमानता के कारण उत्पन्न होती है।'' तथा दोनों भाषाओं के सावधानीपूर्वक किए गए व्यतिरेकी विश्लेषण के आधार पर पाठ्य सामग्री निर्माण, पाठ योजना तथा कक्षागत शिक्षण तकनीक में सुधार किया जा सकता है। इस योजना के अन्तर्गत अंग्रेजी को लक्ष्य भाषा मानते हुए कई यूरोपीय-जर्मन, फ्रेंच तथा रूसी भाषाओं के व्यतिरेकी विश्लेषण प्रस्तुत किए हैं। इनसे जो सामग्री प्रकाश में आई उसने व्यतिरेकी विश्लेषण सिद्धान्त में निहित आस्था को और भी दृढ़ किया। फलस्वरूप व्यतिरेकी विश्लेषण सिद्धान्त को भाषा शिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सिद्धान्त स्वीकार किया जाने लगा। द्वितीय भाषा सीखते समय अध्येता अपनी मातृभाषा की संरचना को स्वभावतः लक्ष्य भाषा पर आरोपित करता है। अतएव अन्य भाषा शिक्षण करने वाले अध्यापक एवं अधिगम करने वाले अध्येता को इस सिद्धान्त के द्वारा शिक्षण/अधिगम प्रक्रिया में उपस्थित होने वाली कठिनाइयों को समझने में सहायता मिलती है। इसके द्वारा दोनों ही भाषा में ''व्याघात'' के स्थल को समझ सकते हैं। साथ ही यह भी देखना होता है कि भाषा अधिगम प्रक्रिया में इन व्याघातों का वास्तविक स्वरूप क्या होता है? इसे जानने के लिए यह आवश्यक है कि हम समझें कि संरचनात्मक भाषा विज्ञान क्या है? साथ ही यह भी जानें कि भाषा शिक्षण के क्षेत्र में नई एवं पुरानी धारणाओं में अन्तर क्या है?

2. भाषा व्याघात के विभिन्न स्तर

युरील वाइनराइख़ ने अपने ग्रन्थ (Language in Contact) में द्विभाषिक स्थिति में भाषा व्याघात के विचार को प्रस्तुत किया है। उन्होंने ''भाषा व्याघात'' की प्रकृति, उसकी विभिन्न विशेषताओं, भेदों, उपभेदों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। उन्होंने भाषा के विभिन्न स्तरों पर होने वाले ''भाषा व्याघात'' की विस्तारपूर्वक चर्चा की है। उनकी मान्यता है कि ''भाषा व्याघात'' का मूल कारण दो भाषाओं का सम्पर्क (कॉन्टेक्ट) है। दो भाषाओं के परस्पर सम्पर्क के फलस्वरूप ''भौतिक व्याघात'' उत्पन्न होता है तथा दो संस्कृतियों के निकट सम्पर्क में आने से ''सांस्कृतिक व्याघात'' उत्पन्न होता है। जैसे, अंग्रेजी सर्वनाम यू (You) का रूपान्तर हिन्दी के कई सर्वनामों में होता है। जैसे, ''तू'', ''तुम'', ''आप''। अंग्रेजी भाषा को हिन्दी के रिश्ते-नाते के शब्दों को एवं सर्वनामों को सीखने में कठिनाई का होना स्वाभाविक है। इस प्रकार व्याघात ''सांस्कृतिक व्याघात'' कहलाता है।

वाइनराइख़ के अनुसार भाषा व्याघात के निम्नलिखित तीन प्रमुख भेद हैं-

1. स्वनिक व्याघात (Phonic Interference)
2. व्याकरणिक व्याघात (Grammatical Interference)
3. शब्द स्तर पर (कोशीय) व्याघात (Lexied Interference)

2.1 स्वनिक व्याघात

स्वनिक व्याघात का क्षेत्र इस बात पर निर्भर करता है कि एक वक्ता किसी भाषा की ध्वनियों को किस प्रकार उच्चरित करता है तथा दूसरी भाषा सीखते समय उस भाषा की ध्वनियों का उच्चारण करते समय वह प्रथम भाषा की ध्वनियों के उच्चारण के तरीकों को द्वितीय भाषा पर आरोपित करता है या द्वितीय भाषा के स्वनों की प्रथम भाषा के स्वनों के साथ तुलना करने लगता है।[1]

स्वनिक व्याघात केवल दो भाषाओं की ध्वनियों की भिन्नता पर ही निर्भर नहीं करता अपितु इस बात पर भी निर्भर करता है कि सुनने वाला उसे किस रूप में ग्रहण करता है। उदाहरणार्थ-हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं की ध्वनियों में ''महाप्राणत्व'' है परन्तु दोनों के स्वनिक गुण भिन्न हैं। हिन्दी में ''महाप्राणत्व'' के आधार पर ध्वनियों में व्यतिरेक मिलता है। जैसे, कल-खल, पल-फल परन्तु अंग्रेजी में ये व्यतिरेक इतना स्पष्ट नहीं है। अतएव हिन्दी भाषा भाषी को इसे समझने में कठिनाई होती है।

2.2 व्याकरणिक व्याघात

''व्याकरणिक व्याघात'' के सम्बन्ध में वाइनराइख़[1] ने मुख्य रूप से रूपिमीय और व्याकरणिक सम्बन्धों के अन्तरण का उल्लेख किया है। व्याकरणिक सम्बन्धों के द्वारा उत्पन्न व्याघात को स्पष्ट करने के लिए वाइनराइख़ ने निम्नलिखित उदाहरण दिया है-

जर्मन भाषा अंग्रेजी के "This woman loves the man" वाक्य को जर्मन भाषा की वाक्य संरचना को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार कहेगा-"dies fran liebt du mann" जबकि इसके द्वारा अंग्रेजी वाक्य के विपरीत अर्थ की अभिव्यक्ति होती है अर्थात् "The man loves the woman."

वाइनराइख़[2] का कथन है कि किन्हीं दो भाषाओं के सम्पर्क की स्थिति में निम्नलिखित व्याकरणिक व्याघातों की सम्भावना की जा सकती है-

1. पहली व्याघात की स्थिति एक भाषा (मातृभाषा) के रूपिमों का दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में प्रयोग किया जाए।
2. दूसरी स्थिति में एक भाषा (मातृभाषा) के व्याकरणिक सम्बन्ध को दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) के रूपिमों पर आरोपित किया जाए अथवा लक्ष्य भाषा में ऐसे व्याकरणिक सम्बन्ध की सत्ता की अपेक्षा की जाए जिसकी किसी भी प्रकार की समानता मातृभाषा में उपलब्ध न हो।
3. तीसरी स्थिति में लक्ष्य भाषा के रूपिमों तथा मातृभाषा के रूपिमों में एकरूपता स्थापित करके लक्ष्य भाषा के रूपिमों में मातृभाषा के व्याकरणिक नियमों के अनुसार परिवर्तन किया जाए।

रूपिम के स्तर पर उत्पन्न व्याघात के लिए हिन्दी और अंग्रेजी के अन्य पुरुष के सर्वनामों का उदाहरण दृष्टव्य है-अंग्रेजी के अन्य पुरुष सर्वनामों के तीन रूप हैं-He, She और It। हिन्दी में इनके लिए ''वह'' का ही प्रयोग होता है। इसी प्रकार हिन्दी में 'से' परसर्ग के लिए अंग्रेजी में 'by', 'with', 'since', 'from' और 'then' का प्रयोग होता है। इस प्रकार की संरचनाएँ भाषिक व्याघात का कारण होती है।

2.3 कोशीय या शब्द स्तर पर व्याघात

इसके अन्तर्गत एक भाषा के शब्दों का दूसरी भाषा में

अन्तरण (ट्रांसफर) हो जाता है जिसके कारण भाषा अधिगम में कठिनाई होती है। हिन्दी के ''शिक्षा'' शब्द का मराठी भाषा में ''दण्ड'' के अर्थ में प्रयोग होता है। इसी प्रकार हिन्दी में ''कल्याण'' शब्द ''मंगल'' के अर्थ में प्रयुक्त होता है, लेकिन मराठी में यह ''विवाह'' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। मणिपुरी में ''पुजारी'' शब्द का प्रयोग चलता है। वैसे, मणिपुरी के लिए यह शब्द आयातित शब्द है। इसका अर्थ मणिपुरी में महाराज (खाना बनाने वाला) के अर्थ में होता है जबकि हिन्दी में मन्दिर के पुजारी के अर्थ में प्रयुक्त होता है। अत: कोई मराठी भाषी या मणिपुरी भाषा हिन्दी बोलते समय इसका गलत प्रयोग कर सकता है। इस प्रकार दूसरी तरफ हिन्दी, मराठी एवं मणिपुरी बोलते समय गलत प्रयोग किया जा सकता है।

अर्थ के स्तर पर भी भाषिक ''व्याघात'' पाया जाता है, जैसे बंगाली एवं असमिया भाषी अपनी भाषा में द्रव पदार्थों के लिए भी ''खाना'' क्रिया का प्रयोग करता है। इस प्रयोग के आधार पर वह हिन्दी में भी ''पानी खाता है'', ''चाय खाता है'' आदि रूपरों का प्रयोग कर सकता है।

अत: स्पष्ट है कि व्यतिरेकी अध्ययन के द्वारा अध्येता समानताओं और असमानताओं की खोज करके इस परिणाम पर पहुँचता है कि एक भाषा के लिए यदि कोई नियम ''अनिवार्य'' है तो वह दूसरी भाषा में भी ''अनिवार्य'' हो सकता है या नहीं। कभी किसी मातृभाषी का कोई नियम ''वैकल्पिक'' होता हो, तो यह कोई जरुरी नहीं है वह दूसरी भाषा भी वैकल्पिक ही हो। इसके साथ ही कभी-कभी ऐसी स्थिति भी पाई जा सकती है जब मातृभाषा में किसी नियम का अभाव हो, परन्तु दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में वह नियम वैल्पिक या अनिवार्य दोनों ही संभावनाओं के साथ उपलब्ध हो।

3. संरचनात्मक भाषा विज्ञान एवं व्यतिरेकी विश्लेषण

पहले संरचनात्मक भाषा विज्ञान को स्पष्ट करना असमीचीन न होगा। जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि संरचनात्मक भाषा विज्ञान भाषा की संरचना पर आधारित होता है। संरचना शब्द का अर्थ किसी काल बिन्दु पर मिलने वाला भाषा का स्वरूप और उसका गठन है अर्थात् वर्णनात्मक भाषा विज्ञान ही संरचनात्मक भाषा विज्ञान है क्योंकि उस स्वरूप का विश्लेषण तथा वर्णन उसकी संरचना का विश्लेषण तथा वर्णन है। इस अर्थ के अनुसार ऐतिहासिक भाषा विज्ञान से संरचनात्मक भाषा विज्ञान भिन्न है। इस धारणा का कारण यह है कि संरचनात्मक दृष्टि का उपयोग व्यापक रूप से वर्णनात्मक धरातल पर ही किया जाता है। वास्तव में संरचनात्मक भाषा विज्ञान ऐतिहासिक भाषा विज्ञान का विरोधी नहीं है। डॉ. देवी शंकर द्विवेदी का कथन है कि ''संरचनात्मक भाषा विज्ञान भाषा का गठन करने वाली इकाइयों का विश्लेषण और वर्णन करता है तथा विभिन्न भाषिक धरातलों पर मिलने वाली उनकी क्रमिक श्रेणीबद्धता का अध्ययन करता है।''

संरचनात्मक भाषा विज्ञान के दो लक्षण हैं-एक तो उसके अध्ययन का उपागम भाषा की अपनी संरचना होती है जिसके कारण उसकी अध्ययन प्रणाली आगमनात्मक हो जाती है और दूसरे इसके अन्तर्गत संरचना में पाई जाने वाली इकाइयों की स्वतंत्रता को स्वीकार करने अथवा उनके भौतिक स्वरूप का विश्लेषण करने के बजाये उसमें उनकी श्रेणीबद्धता तथा सम्बन्धित व्यवस्था में उनकी क्रियात्मक स्थिति का परीक्षण करने की दृष्टि होती है। इन दोनों लक्षणों से युक्त अध्ययन संरचनात्मक भाषा विज्ञान के अन्तर्गत आता है। चाहे वह अध्ययन वर्णनात्मक हो, चाहे ऐतिहासिक।

संरचनात्मक भाषा विज्ञान के महत्व को द्वितीय भाषा शिक्षण में प्रतिपादित करते हुए डॉ. देवीशंकर द्विवेदी का कहना है कि ''संरचनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत की जाने वाली ऐतिहासिक संरचनात्मकता का महत्व भी भाषा शिक्षण में है, विभिन्न भाषिक धरातलों पर मिलने वाले अनियमित रूपों का स्पष्टीकरण उससे सहज ही हो जाता है जिससे उन्हें समझने-समझाने तथा आत्मसात करने-करने में सरलता होती है। वर्णनात्मक धरातल पर संरचनात्मक भाषा विज्ञान की उपयोगिता भाषा शिक्षण में कहीं अधिक है।[2] उन्होंने आगे फिर कहा कि-संरचनात्मक भाषा विज्ञान लक्ष्य भाषा की संरचना की उस प्रकार की समस्याएँ सुव्यवस्थित रूप में विश्लेषण करके समाधान के साथ प्रस्तुत कर सकता है।[1]

संरचनात्मक भाषा विज्ञान का समर्थतम उपयोग भाषा शिक्षण के प्रसंग में व्यतिरेकी विश्लेषण में पाया जाता है। इसमें मातृभाषा तथा लक्ष्य भाषा की संरचनाओं का विश्लेषण अलग-अलग किया जाता है और उसके माध्यम से दोनों भाषाओं की तुलना करके समानताओं एवं विषमताओं का निर्धारत किया जा सकता है। इसके फलस्वरूप द्वितीय भाषा शिक्षण/अधिगम में अध्येता को सरलता से द्वितीय भाषा को आत्मसात् कराया/किया जा सकता है।

इससे यह स्पष्ट हो गया है कि द्वितीय भाषा या अन्य भाषा अधिगम एवं शिक्षण में संरचनात्मक भाषा विज्ञान के आधार पर की गई व्यतिरेकी विश्लेषण पद्धति ज्यादा उपयोगी है। भाषा विज्ञान की अनुवभववादी और संरचनात्मक धारा ने भाषा विज्ञान के जिस मॉडल (व्यतिरेकी विश्लेषण पद्धति) की संकल्पना की है, उस व्यतिरेकी विश्लेषण पद्धति के परिप्रेक्ष्य में संरचनात्मक भाषा विज्ञान की पुरानी एवं नवीन मान्यताओं से अवगत होना अप्रासंगिक न होगा।

4. नवीन एवं प्राचीन संरचनात्मक भाषा वैज्ञानिक मान्यताओं में अन्तर

संरचनात्मक भाषा विज्ञान में व्यतिरेकी अध्ययन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव[2] ने (१९७९) भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्तों की नवीन और प्राचीन मान्यताओं में अन्तर को निम्नलिखित सन्दर्भों में स्पष्ट किया है:-

1. भाषा का मूलधार उसका उच्चरित रूप होता है, न कि उसका लिखित रूप।
2. भाषा का मूलाधार मातृभाषा-भाषियों का वास्तविक वाक्-व्यापार होता है, न कि भाषा प्रयोक्ताओं अथवा वैयाकरणों की शुद्ध-अशुद्ध सम्बन्धी धारणा।
3. भाषा अपने मूल रूप में स्वभाव या आदत के रूप में सिद्ध मिलती है, न कि व्याकरण सम्बन्धी अर्मूत नियम संहिता के रूप में।
4. भाषिक इकाइयाँ अपने आप में स्वायत्त न होकर संरचनात्मक संबंधों के प्रकार्य के रूप में सिद्ध रहती हैं, अत: भाषा अपनी मूल प्रकृति में संरचना अथवा ''व्यवस्था'' न कि इकाइयों का कोश मात्र।
5. भाषा की संरचनात्मक इकाइयाँ अपनी विशिष्टता एवं प्रकार्य की अभिव्यक्ति के लिए रूपात्मक (फॉरमल) आभिलक्षणों से युक्त होती है, अत: उसको समझने और परिभाषित करने का आधार ''रूपात्मक'' होता है, न कि ''संकल्पनात्मक''
6. भाषाएँ एक दूसरे से अनगिनत रूपों में भिन्न हो सकती हैं जो अपने में यथार्थ और वास्तविक होती हैं, जबकि सार्वभौम व्याकरण भाषा अध्येताओं की मात्र परिकल्पित संकल्पना है।
7. भाषा व्यवहार के स्तर पर कौशल है। अत: भाषा शिक्षण का लक्ष्य इन कौशलों में दक्षता प्रदान करना होता है, न कि भाषा के बारे में जानकारी देना।

5. रूपान्तरण व्याकरण तथा व्यतिरेकी विश्लेषण

रूपान्तरण व्याकरण के अनुसार-''भाषा नियमों का समुच्चय'' है। इस व्याकरण का प्रवर्तक है चॉम्स्की। इस व्याकरण सिद्धान्त के अनुसार नई भाषा सीखने का अर्थ होता है उस भाषा

(लक्ष्य भाषा) के नियम सीखना। भाषा सीखते समय अध्येता नित नय नियमों का निर्माण तथा परीक्षण करता चलता है। इसमें ''भाषा आदतों'' का समुच्चय है। इस पूर्व प्रतिपादित सिद्धान्तों का भी रूपान्तरण व्याकरण सिद्धान्त ने खण्डन किया है।

रूपान्तरण व्याकरण के समर्थकों की यह मान्यता है कि वे अपने मॉडल द्वारा केवल तुलना ही प्रस्तुत नहीं करते अपितु तुलना के लिए एक अंतदृष्टि भी प्रदान करते हैं। उनका यह भी मत है कि संरचनात्मक विवरण और ''संरचनात्मक परिवर्तन'' दो भिन्न प्रकार के कार्य करते हैं। किसी वाक्य का संरचनात्मक परिवर्तन उन रूपान्तरण नियमों से सम्बद्ध है जो आन्तरिक संरचना को बाह्य संरचना में रूपान्तरित करते हैं।

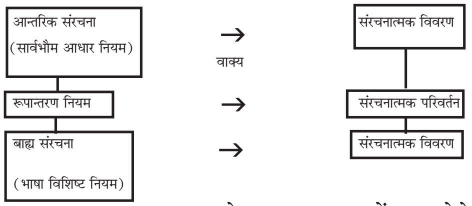

अतएव रूपान्तरण व्याकरण के अनुसार भाषा में कुछ ऐसे नियम होते है जो आधार नियम (base ruled) कहलाते हैं, जो भाषा विशष के न होकर सार्वभौम नियम होते हैं, और हर भाषा में रूप में आते हैं। आन्तरिक संरचना में सार्वभौम नियम (Universal set of rules) तथा बाह्य संरचना में भाषा विशिष्ट नियम (language specific rules) प्रयुक्त होते हैं।

रूपान्तरण व्याकरण के प्रतिपादकों ने यद्यपि '' अनुप्रयुक्त रूपान्तरण की कल्पना नहीं की थी, लेकिन इस सिद्धान्त में सर्वोत्कृष्ट भाषा विश्लेषण सिद्धान्त के रूप में आस्था रखने वालों ने व्यतिरेकी विश्लेषण में इसके अनुप्रयोग की संभावनाओं पर विचार करना आरम्भ कर दिया। इसके बारे में निकेल (1971) कर मंतव्य उल्लेखनीय है।

''यह भाषा विश्लेषण का एक सर्वाधिक पूर्ण विकसित मॉडल है। इसके द्वारा किया गया विश्लेषण तथा तदनुसार किया गया व्यतिरेकी विश्लेषण अधिक प्रभावी होगा। इसके द्वारा भाषा के बहुत-से ऐसे अभिलक्षण प्रकाश में आयेंगे जो अन्यथा अस्फुट रहते है। यह मॉडल अपने से पूर्ववर्ती भाषा मॉडलों से कहीं अधिक सूक्ष्मता से दो भाषाओं के मध्य विद्यमान वैविध्य को प्रकट कर सकता है।''

यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि किसी मॉडल का अनुप्रयोग करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि भाषा शिक्षण-अनुशिक्षण प्रक्रिया मात्र है, वह भाषा वैज्ञानिक संरचनत्मक प्रक्रिया नहीं है। इसके साथ ही इसमें अन्य मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षापरक प्रक्रियाओं का भी पर्याप्त योगदान होता है। इस विषय में यह भी हो गया कि शिक्षणपरक या भाषाज्ञान क्षमतापरक (teaching oriented of competence oriented) सिद्धान्त इस प्रकार के अध्ययन के लिए अपर्याप्त हैं। रूपान्तरण सिद्धान्त भाषा ज्ञान का ही मॉडल है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत यह कभी भी दावा नहीं किया जाता है कि इसके द्वारा वक्ता और श्रोता के भाषिक प्रयोग के मूल में होने वाली प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जा सकता है। इस ज्ञानोन्मुख सिद्धान्त की अपेक्षा संभवत: ''भाषा प्रयोगोन्मुख'' सिद्धान्त अधिक प्रभावशाली सिद्ध हो सकते हैं।

6. अन्य सिद्धान्त एवं व्यतिरेकी विश्लेषण

6.1 स्तर विन्यासी व्याकरण एवं व्यतिरेकी विश्लेषण

रूपान्तरणवादी विचारधारा की असफलता के बाद सिद्धान्तों/मॉडलों का व्यतिरेकी अध्ययन में अनुप्रयोग करने के प्रयास किए गए। इनमें स्तर विन्यासी व्याकरण (Stratificational Grammar) का प्रमुख स्थान है। इसके अन्तर्गत सवोक्रोशियन का व्यतिरेकी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। इस सिद्धान्त के समर्थक इसे अक्षम भाषा प्रयोगोन्मुख (Perfopmance Oriented) मॉडल स्वकार करते हैं। इसमें प्रमुख तथा उसके प्रत्यक्षण (Perception) के मूल में निहित व्यवहारपरक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इसी सिद्धान्त के सम्बन्ध में ''स्नूक'' का वक्तव्य दृष्वय है। इस सिद्धान्त के समर्थक इसे भाषा-क्षमता और भाषा प्रयोग दोनों का मॉडल मानते हैं। ''स्नूक'' के अनुसार ऐस मॉडल जो भाषा प्रयोग पर आधारित हो, भाषा शिक्षणपरक भाषा वैज्ञानिक शोध में अधिक सफल और उपयोगी सिद्ध होगा।

6.2 स्केल एण्ड कैटेगेरी मॉडल एवं व्यतिरेकी विश्लेषण

हैलिडे ने ''स्केल एण्ड कैटेगेरी'' मॉडल के आधार पर हिब्रू और अंग्रेजी भाषाओं का व्यतिरेकी अध्ययन किया, परन्तु वह भी उतना सफल नहीं हो सका।

6.3 व्यतिरेकी विश्लेषण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

द्वितीय महायुद्ध के समय जब विभिन्न राष्टों के सैनिकों एवं प्रशासक वर्ग को दूसरे राष्ट्रों के नागरिकों के साथ निकट संपर्क में आना पड़ तो उन्होंने एक दूसरे देश की भाषा को सीखने का प्रयास किया। उस समय अंग्रेजी तथा दूसरी कई भाषाओं को अन्य भाषा के रूप में सीखने की आवश्यकता अनुभव की गई तथा विभिन्न भाषाओं का अध्ययन-अध्यापन योजनाबद्ध रूप में आरम्भ हुआ। इस दौरान यह अनुभव किया गया कि अंग्रेजी सीखने में जापानियों, भारतीयों, अरबी-भाषा-भाषियों तथा अफ्रीका के लोगों की कठिनाईयाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं, इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी भी कठिनाईयाँ थीं जो इन सबके लिए समान थीं। अतएव यह प्रश्न उठना स्वाभाविक था कि इस अन्तर का कारण क्या हैं? क्या यह अन्तर अन्य भाषा सीखने वालों की अपनी भाषा के प्रभाव के कारण है या किसी अन्य कारण से? इस प्रकार भाषा शिक्षकों और भाषा विज्ञानियों का ध्यान किसी नई भाषा को सीखते समय जो कठिनाईयाँ सामने आती हैं उनका मूल कारण ढूँढने एवं भाषा शिक्षण प्रक्रिया में आने वाली इन कठिनाईयों का निराकरण करने में लगा। परन्तु इस दिशा में हुए शोधों ने यह स्पष्ट कर दिया कि इस अन्तर का मुख्य कारण उनकी अपनी-अपनी भाषात्मक विभिन्नता थी, इसलिए भाषा विज्ञानिकों का ध्यान अनुभववादी संरचनात्मक विश्लेषण की ओर गया जिसमें दो भाषाओं की संरचनाओं के भाषिक तत्वों को लेकर शुद्ध भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया। ये भाषाएँ हैं अध्येता की मातृभाषा (स्रोत भाषा) और लक्ष्य भाषा। इस प्रकार व्यतिरेकी भाषा विश्लेषण का अविर्भाव हुआ।

व्यतिरेकी भाषा विश्लेषण के बारे में चर्चा करते हुए सबसे पहले ''फ्रीज'' का नाम आता है। उन्होंने अपनी पुस्तक (Teaching and learning English as a Foreign Language) की भूमिका में लिखा है कि ''लक्ष्य भाषा और स्रोत भाषा तथा दोनों संस्कृतियों की व्यवस्थित तुलना द्वारा दोनों भाषाओं की समान, असमान और अर्धसमान संरचनाओं का पता लगाया जा सकता है। साथ ही यह भी ज्ञात हो सकता है कि किन-किन स्थलों पर भाषा सीखने वाले को कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। ''रॉबर्ट लाडो ने'' लिंग्विस्टिक्स एक्रॉस कल्चर्स (Linguistics across culture) की भूमिका में व्यतिरेकी विश्लेषण के आधार पर तैयार की गई सामग्री के महत्व को प्रतिपादित करते हुए फ्रीज के मत को उद्धृत करते हुए कहा कि ''वह शिक्षण सामग्री सर्वाधिक प्रभावशाली होती है जो लक्ष्य भाषा (अन्य भाषा) और स्रोत भाषा (मातृभाषा) की सामग्री की सावधानीपूर्वक तुलना तथा वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर तैयार की गई होती।'' इसमें रॉबर्ट लाडो ने भाषा संरचना तथा संस्कृति की तुलना का उद्देश्य भी सामने रखा। अन्य भाषा सीखते

समय अध्येता की मातृभाषा की संरचना और संस्कृति का भी अन्य भाषा में अन्तरण (ट्रांसफर) होता है। फलस्वरूप अन्य भाषा शिक्षण अवधि में "व्याघात" उत्पन्न होता है। अत: व्यतिरेकी विश्लेषण का प्रयोजन यही है कि अन्य भाषा सीखने में मातृभाषा जो व्याघात उत्पन्न करती है उसका निराकरण किया जाए और भाषा शिक्षण सामग्री तथा विधियों में सुधार लाया जाए। लाडो के अनुसार इस अध्ययन विधि के द्वारा एक तो अन्य भाषा के अध्येता द्वारा भाषा सीखने में आने वाली कठिनाइयों की ओर संकेत किया जाता है दूसरे उन कठिनाइयों का भी पता चलता है जो मातृभाषा-व्याघात द्वारा उत्पन्न होती है। अन्य भाषा सीखते समय अध्येता कुछ नए नियमों की व्यवस्था सीखता है जबकि उसमें मातृभाषा बोलने तथा समझने की क्षमता विद्यमान होती है अर्थात् वह कुछ भाषिक नियमों की व्यवस्था पहले सीख चुका होता है, इसलिए नई भाषा या उसके नए नियमों को सीखने में मातृभाषा के नियमों के कारण कुछ कठिनाइयाँ पैदा होती हैं। ऐसी स्थिति में अन्य भाषा सीखने में व्यतिरेकी विश्लेषण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हॉगेन तथा वाइनराइख़ (1953) ने भी द्विभाषिकता के अध्ययन के सन्दर्भ में व्यतिरेकी विश्लेषण का अध्ययन किया था।

इसका अध्ययन अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान केन्द्र वाशिंगटन, डी.सी. (सं.रा.अ.) में "व्यतिरेकी विश्लेषण माला" के रूप में किया गया था। इसी अध्ययन माला के अन्तर्गत जर्मन, स्पेनिश तथा इटैलियन के व्यतिरेकी विश्लेषण प्रकाश में आए हैं। इस विश्लेषण के अन्तर्गत व्याकरणिक विश्लेषण के सम्बन्ध में स्टाकवेल, ब्राउन तथा मार्टिन की "द ग्रैमेटिकल स्ट्रक्चर्ज ऑफ इंग्लिश एण्ड स्पेनिश" काफी चर्चित रही। इस पुस्तक में दोनों भाषाओं की तुलना के आधार पर व्यतिरेकी संरचनाओं में कठिनाइयों को सरल से कठिन के क्रम (हायरार्की ऑफ डिफिकल्टीज़) के रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें यह भी प्रतिपादित किया गया कि भाषा अध्ययन में उन संरचनाओं को अधिक प्रमुखता दी जानी चाहिए जो प्रकार्य-भार (Functional Load) की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें बाह्य जटिलताओं के साथ आन्तरिक जटिलताओं की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया गया। आरम्भ में जितने भी व्यतिरेकी अध्ययन हुए वे संरचनात्मक व्यवहारपरक भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्त के आधार पर हुए। इनमें साँचा अभ्यास (drill) की उपयोगिता पर बल दिया गया। इस दिशा में और भी काम होते रहे। वाशिंगटन के जार्जटाउन विश्वविद्यालय में 1968 में व्यतिरेकी भाषा विज्ञान और भाषा शिक्षण में उसकी सार्थकता (Contrastive Linguistics and its Pedogogical Implications) ही एक पूरी गोष्ठी का विषय था।[1] 1969 में कैम्ब्रिज में अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस के एक सेक्शन में भी व्यतिरेकी भाषा विज्ञान पर काफी लेख पढ़े गए थे जिनमें से मुख्य तेरह के बाद में (Papers in Contrastive Linguistics) नाम से जी. निकेल (G. Nickel) द्वारा सम्पादित होकर 1971 में प्रकाशित हुए।

व्यतिरेकी विश्लेषण सिद्धान्त आगे चलकर दो रूपों में विभक्त हो गया जिनमें पहला पक्ष इस पारम्पकिर मान्यता को लेकर चलता है कि द्वितीय भाषा के अनुशिक्षण में होने वाली कठिनाइयों का मुख्य कारण स्रोत भाषा की संरचना का "व्याघात" है और इसे मालूम करने के लिए आधार भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना की जाती है तथा उसके आधार पर व्यतिरेकी विश्लेषण करके व्यतिरेकी बिन्दुओं का चयन किया जाता है। इसे "पूर्वानुमानवाद" कहा गया है। परन्तु इस प्रकार पूर्वानुमानों (Preditions) की श्रमसाध्य, कष्टप्रद प्रक्रिया से असन्तुष्ट अन्य व्यतिरेकी विश्लेषण के समर्थक यह मानते हैं कि भाषा को सीखने में होने वाली कठिनाइयों का आधार भाषा का व्याघात तो है परन्तु वे दोनों भाषाओं की तुलना और व्यतिरेकी विश्लेषण न करके अध्येता की वास्तविक त्रुटियों अथवा कठिनाइयों का या भाषा दोषों का कारण मातृभाषा या भाषा की संरचना में ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं। वस्तुत: व्यतिरेकी विश्लेषण के दोनों रूप मातृभाषा "व्याघात" को भाषा दोषों का मूल कारण मानते हैं। इनमें प्रथम पक्ष जो "पूर्वानुमान" को ज्यादा महत्व है उसे दृढ़ रूप (Strong version) कहते हैं और दूसरा पक्ष जो "व्याख्या" पर ज्यादा बल देता है उसे शिथिल रूप (Weak version) की संज्ञा दी गई है। व्यतिरेकी भाषा विज्ञान का दूसरा पक्ष "वीक वर्शन" (Weak version) भाषा दोष विश्लेषण (Error Analysis) के काफी निकट आता है। दोनों में अन्तर इतना है कि व्यतिरेकी विश्लेषण जहाँ यह मानकर चलता है कि भाषा दोषों का मुख्य कारण मातृभाषा का व्याघात है वहीं भाषा दोष विश्लेषण वादी मानते हैं कि भाषा-दोष भाषा अनुशिक्षण प्रक्रियाओं के फलस्वरूप पैदा होते हैं।

भाषा शिक्षण की दृष्टि से व्यतिरेकी भाषा विज्ञान की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए लगभग पिछले चार दशक से व्यतिरेकी भाषा विश्लेषण का काम भारत सरकार के तीन महत्वपूर्ण संस्थानों (केन्द्रीय अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा) एवं भारतीय कई विश्वविद्यालयों में हो रहे हैं जिससे भारत जैसे बहुभाषी देश की जनता एक दूसरे की भाषा के अधिगम में (द्वितीय भाषा के रूप में सीखने में) लाभान्वित हो रही है।

सन्दर्भ

1. **अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान,** 1980, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्वत, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।
2. **भाषा शिक्षण,** 1979, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव दिल्ली मैक मिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया।
3. **व्यतिरेकी भाषा विज्ञान,** 1983, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, भोलानाथ तिवारी।
4. **भारतीय साहित्य,** 21, 1-4, क.मु.हि. तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ आगरा, सं. विद्यानिवास मिश्र।
5. **संरचनात्मक भाषा विज्ञान,** 1981, देवी शंकर द्विवेदी, आलेख प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. **Aspects of Language,** 1968, Bolinger D., Harcourt Brace and World Inc.
7. 'Contrastive Analysis', 1974, Buoren P.V. **Techniques in Applied Linguistics** (edited by Allen & Cordor).
8. 'Language in Contact', 1953, Weinreich Uriel. **Linguistics Circle of New York,** New York.
9. 'Review of Siknner's Verbal Behaviour', 1959, Chomsky Naom, **Language.**
10. 'A stratification approach to contrastive analysis', 1971, Snook R.L. **Niekel.**
11. Problems of Learners' difficulties of foreign language acquisition, 1971, **Niekel.**
12. **Common Errors in English**, 1949, French, F.G., London: O.U.P.
13. **Linguistics Across Culture,** 1957, Lado, R.B., Ann Arbor : Michigan.
14. **Papers in Constrastive Linguistics,** 1971, Edited by Nickel Gerhard, Cambridge University Press.